एकलव्य का प्रकाशन



पत्ते ही पत्ते

वर्षा सहस्त्रबुद्धे
चित्र : माधुरी पुरन्दरे

पत्ते ही पत्ते

वर्षा सहस्त्रबुद्धे
चित्र – माधुरी पुरंदरे

अक्षर नंदन में पाई
असीम चेतना को,
उसे उत्पन्न करने वाले बच्चों को
और उसे संजोकर रखने वाले
बड़ों को सप्रेम

एकलव्य
का प्रकाशन

पत्ते ही पत्ते

मूल मराठी 'अशी पान तशी पान' का हिन्दी अनुवाद

लेखिका : वर्षा सहस्त्रबुद्धे
चित्र : माधुरी पुरंदरे
साज सज्जा : विद्या नारळकर
अनुवाद : शारदा बर्वे
सहयोग : अनघा

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत शासन एवं
सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित।

मूल्य रु. 7.00

प्रकाशक
एकलव्य,
ई-1/25, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016, म. प्र.

ISBN- 81- 87171-25-1
मार्च, 1999

भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित। 5000 प्रतियाँ

मन की बात

इन पुस्तिकाओं का प्रस्तुतिकरण कई लोगों की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष मदद से ही मुमकिन हुआ है। इनकी जड़ें पूना की अक्षर-नंदन पाठशाला में स्थित हैं, जहाँ बच्चों की शिक्षा को अर्थपूर्ण और आनन्दमय बनाने के लिए हम प्रयत्नशील और प्रयोगशील हैं। इन प्रायोगिक अनुभवों से जन्मी अनेक कृतियों को विद्याताई (अक्षर नंदन की संस्थापकों में से हैं) ने बहुत सराहा है।

एक शिक्षक और माँ के नाते सूनृता का लिपि-परिचय और किताबों की दुनिया में उसका प्रवेश मेरे लिए अनोखा अनुभव है जो इन पुस्तिकाओं के इस रूप का प्रमुख कारण बन गया है।

अक्षर-नंदन में काम करते हुए, समय की पाबंदी रख पाना असंभव है। समय की सोच को मन से दूर रखकर, सूनृता को जिनपर सौंपकर निश्चिंत मन से काम कर पाती हूँ, उन माई-आजी, हेमा-आजी और नाना-आजोबा की कृतज्ञ हूँ।

माधुरी की आत्मीयता के रूप में हरेक पन्ने पर प्रकट हुए रेखांकनों से पुस्तिकाओं की दर्शनीयता और भी बढ़ गई है। शिक्षा के मूल तत्व और उनका आशय ये रेखाएँ निःसंदेह व्यक्त करती हैं। पुस्तिकाओं की साज-सज्जा विद्या नारळकर ने की है।

लिपि से नए-नए परिचित हुए बच्चों के लिए ये पुस्तिकाएँ बनाते हुए मेरा भाषा से लगाव और भी दृढ़ होता जा रहा है।

'शिक्षा' की संकल्पना का स्वरूप जानने की लगन, उसकी तरफ एक खिंचाव हमेशा ही मन में रहता है। कभी शिक्षण-प्रक्रिया का निश्चित रूप जानना, मानो असंभव ही लगता है तो कभी किसी न किसी रूप में सुलझकर वह अचानक सामने आ जाता है। ये सभी अनुभव बड़े अनोखे होते हैं।

केवल पढ़ाने से शिक्षा नहीं हो पाती। बच्चे के मन में सीखने की आकांक्षा हो तभी वह पढ़ सकता है। बच्चों का विश्व अखंड घटनाओं से भरपूर

होता ही है। उनकी गतिविधियों से उनकी उत्सुकता-अनुत्सुकता प्रकट होती रहती है। उनकी पसन्द या नापसन्द मानो उनके स्वरों में उतर आती है।

संवेदित अनुभवों से बच्चों के मन में जन्मे भाव, उनकी अवाक निस्तब्धता के रूप में या चंचलता के रूप में हमारे अन्तर तक पहुँच जाते हैं।

मन ही मन अपने पढ़ाने की दिशा की, योग्यता की जाँच होती रहती है। बच्चों की खुलकर की गई बातें, उनकी आँखों की चमक, शिक्षक को अप्रत्यक्ष रूप में मानो बता देती है कि शिक्षक पूरा है या अधूरा।

बच्चों की जन्मजात वृत्ति, उनकी क्षमताएँ, उन्हें दिलचस्प लगने वाली बातों की कदर करते हुए, उन्हें न्याय की दृष्टि से देखते हुए हम कई अनुभवों के साक्षी होते हैं। इन अनुभवों की गहराई असीम होती है। इस प्रकार शैक्षणिक उद्देश्यों का वास्तव में रूपान्तर होता दिखाई देता है। तभी तो सीख पाते हैं बच्चे और हम भी। औपचारिक रीति से लिया हुआ प्रशिक्षण और भी तेज होता जाता है। उसकी सार्थकता भी बढ़ते जाने का अनुभव मिलता है। 'सुदृढ़ व्यक्तित्व का गठन', 'सर्वांगीण विकास' जैसे शैक्षणिक उद्देश्यों का दैनंदिन शिक्षा से गहरा सम्बन्ध है और वह इन उद्देश्यों तक पहुँचने का साधन भी है।

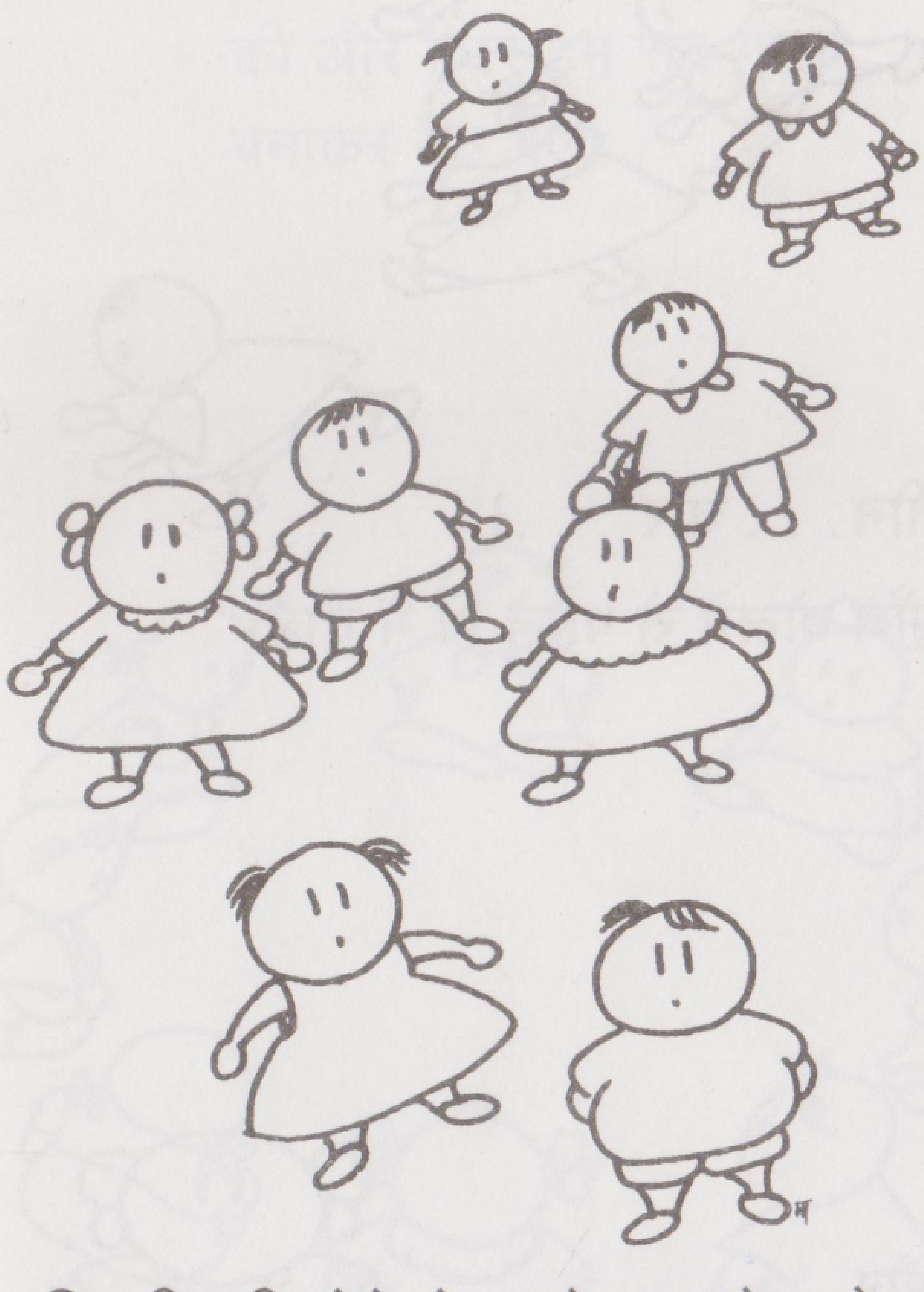
शैक्षणिक अनुभव की चिंगारी को जीवित रखने के लिए बच्चों के प्रति संवेदनशील सजगता होनी चाहिए। उनके प्रतिसादों (कठिनाइयों) का सूक्ष्म निरीक्षण और उन्हें ग्रहण कर उन्हें पढ़ाने के लिए नई राहों की खोज में रहना चाहिए। इसका और कोई पर्याय नहीं। शिक्षण अर्थपूर्ण बनाने का और आनंद दूर तक फैलाने के सपने देखने का साहस हम तभी कर सकते हैं जब कष्ट उठाने की हमारी तैयारी हो।

● वर्षा सहस्त्रबुद्धे

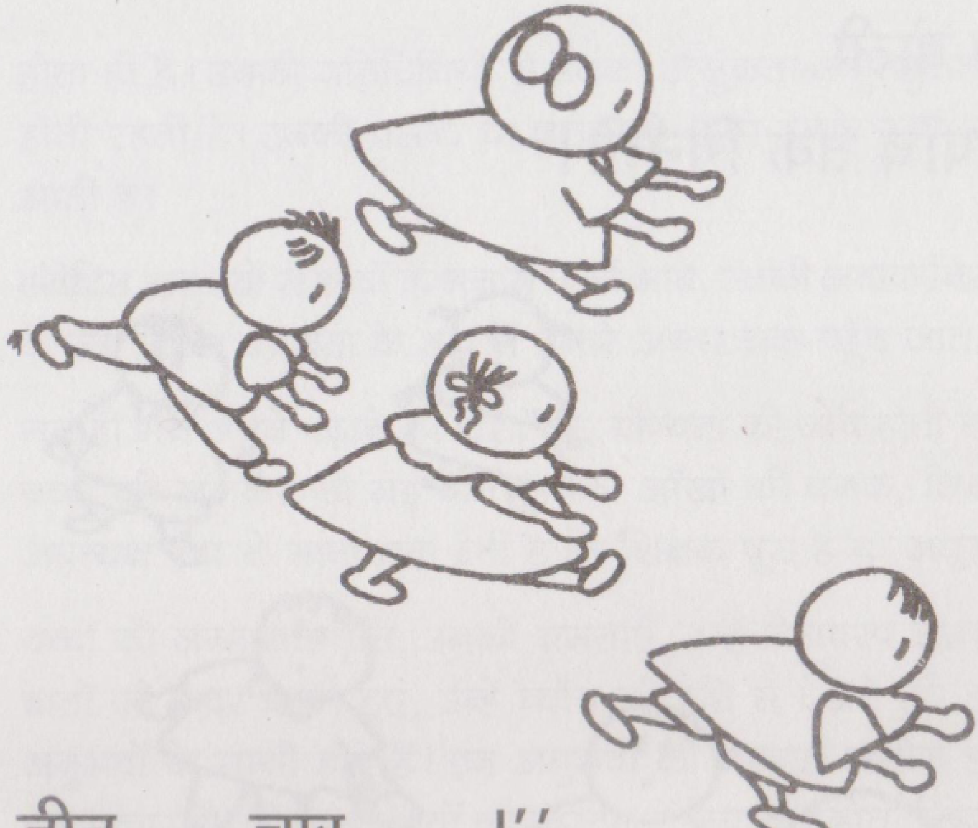
मुख्य अध्यापिका, अक्षर नंदन, पुणे

1294, शुक्रवार पेठ, सुभाष नगर, 7 वीं गली, पुणे – 411 002

दीदी बोली,
''मैं पाँच तक गिनूँगी।

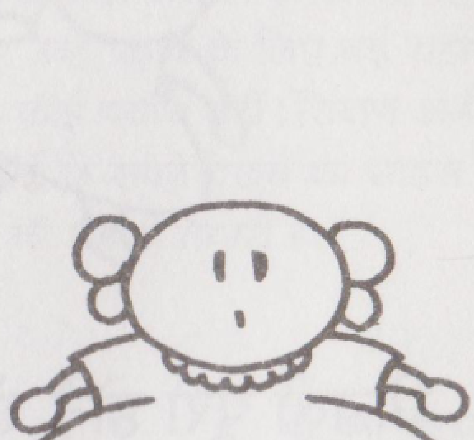


गिनती पूरी होने से पहले तुम लोग गोला बनाकर बैठ जाओ। एक...दो...



तीन. . . चार . . .।’’

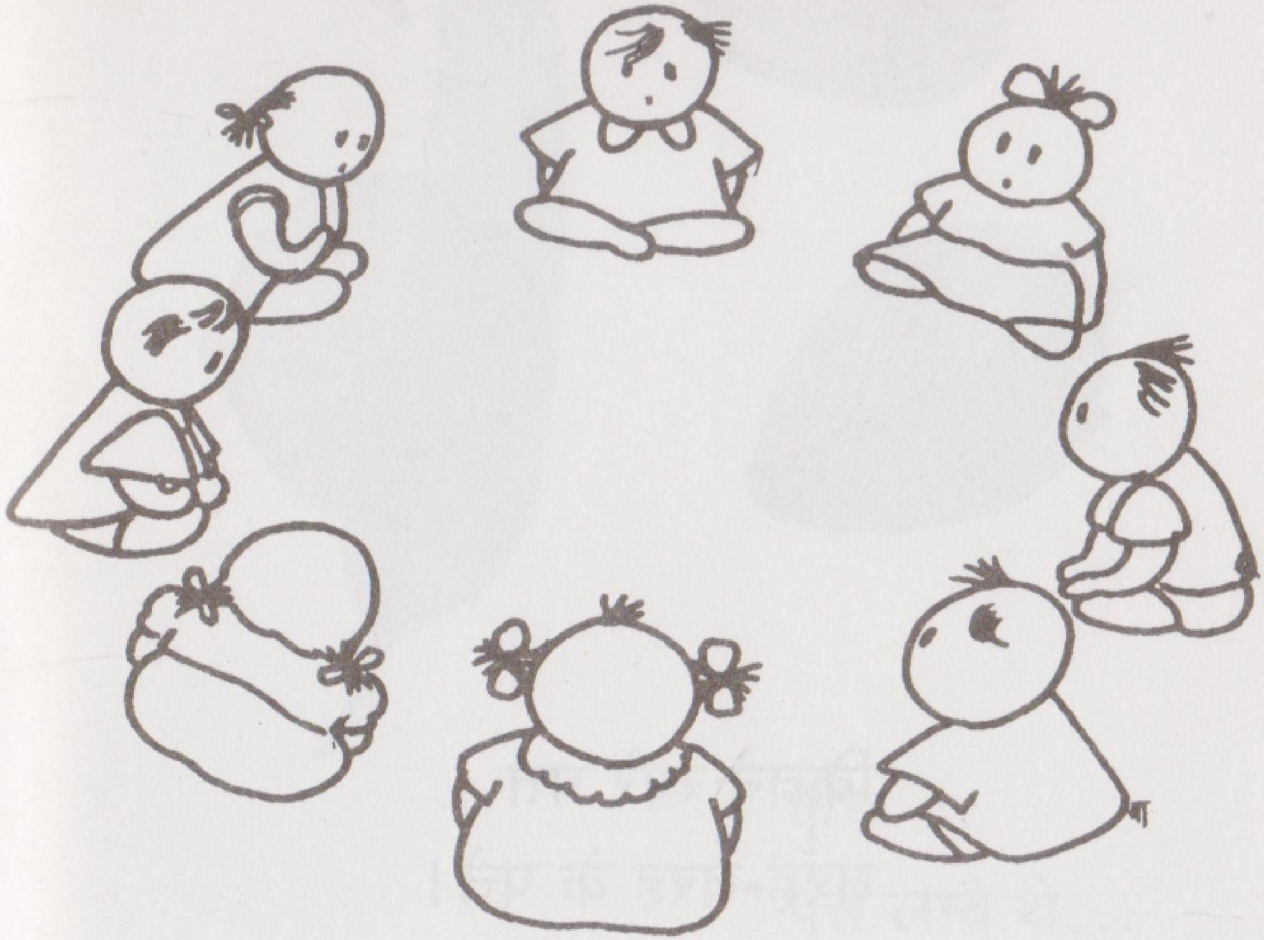
पाँच बोलने से पहले ही मैं दौड़ी



और

धड़ाम से बैठ गई।

उधर दीदी ने गिनती पूरी
की और इधर हम सब गोला
बनाकर बैठ गए।

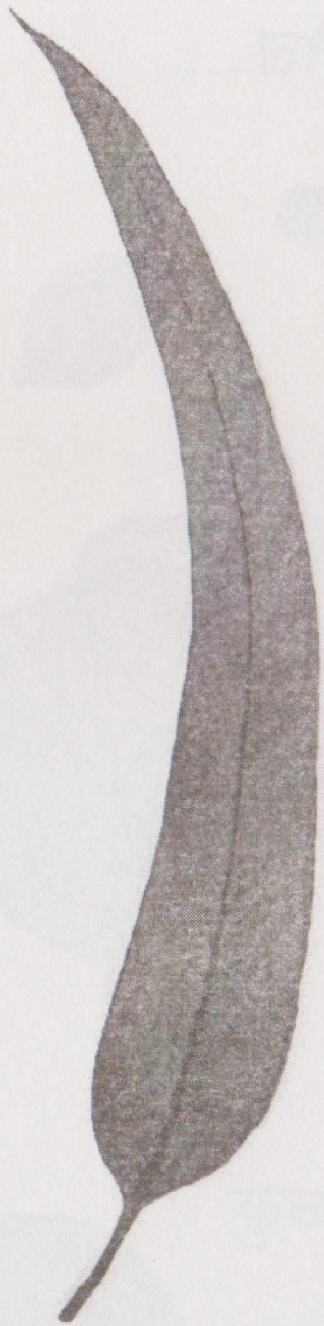


आज दीदी
पत्ते लेकर आई थीं।



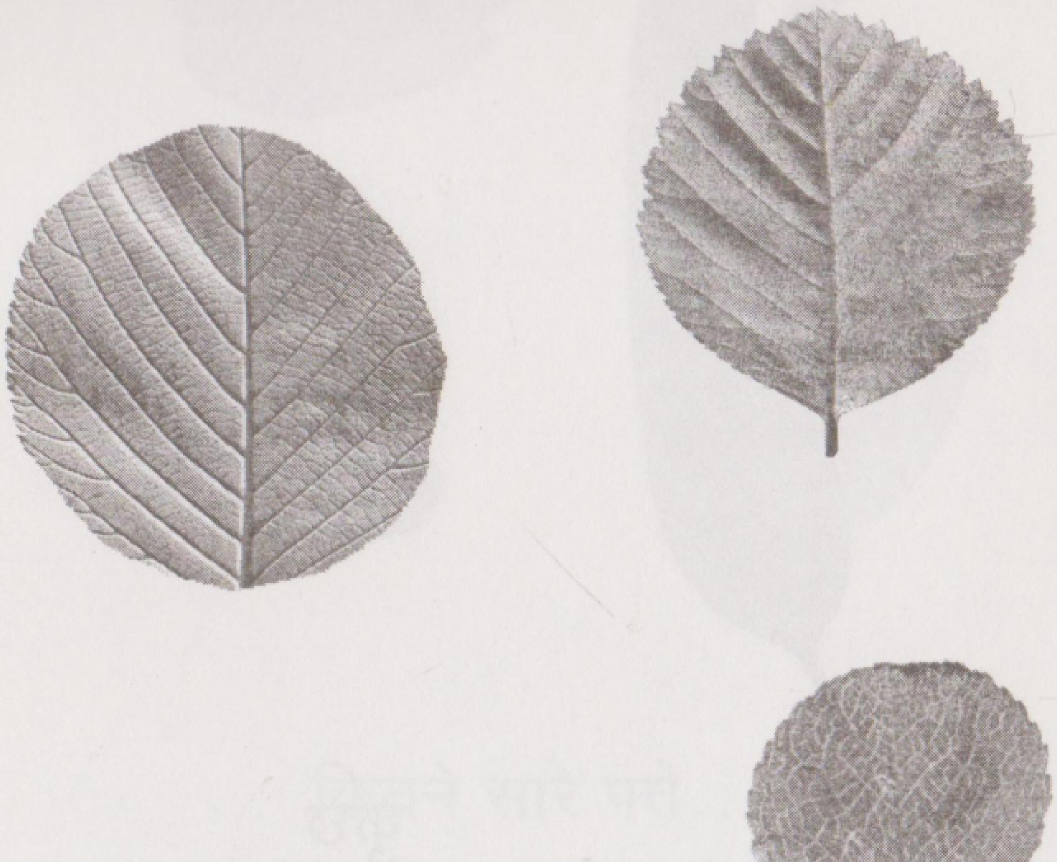
कितने सारे पत्ते...
तरह-तरह के पत्ते।

हम ने पत्तों को
अच्छे से देखा।



कुछ
पत्ते लम्बे थे...

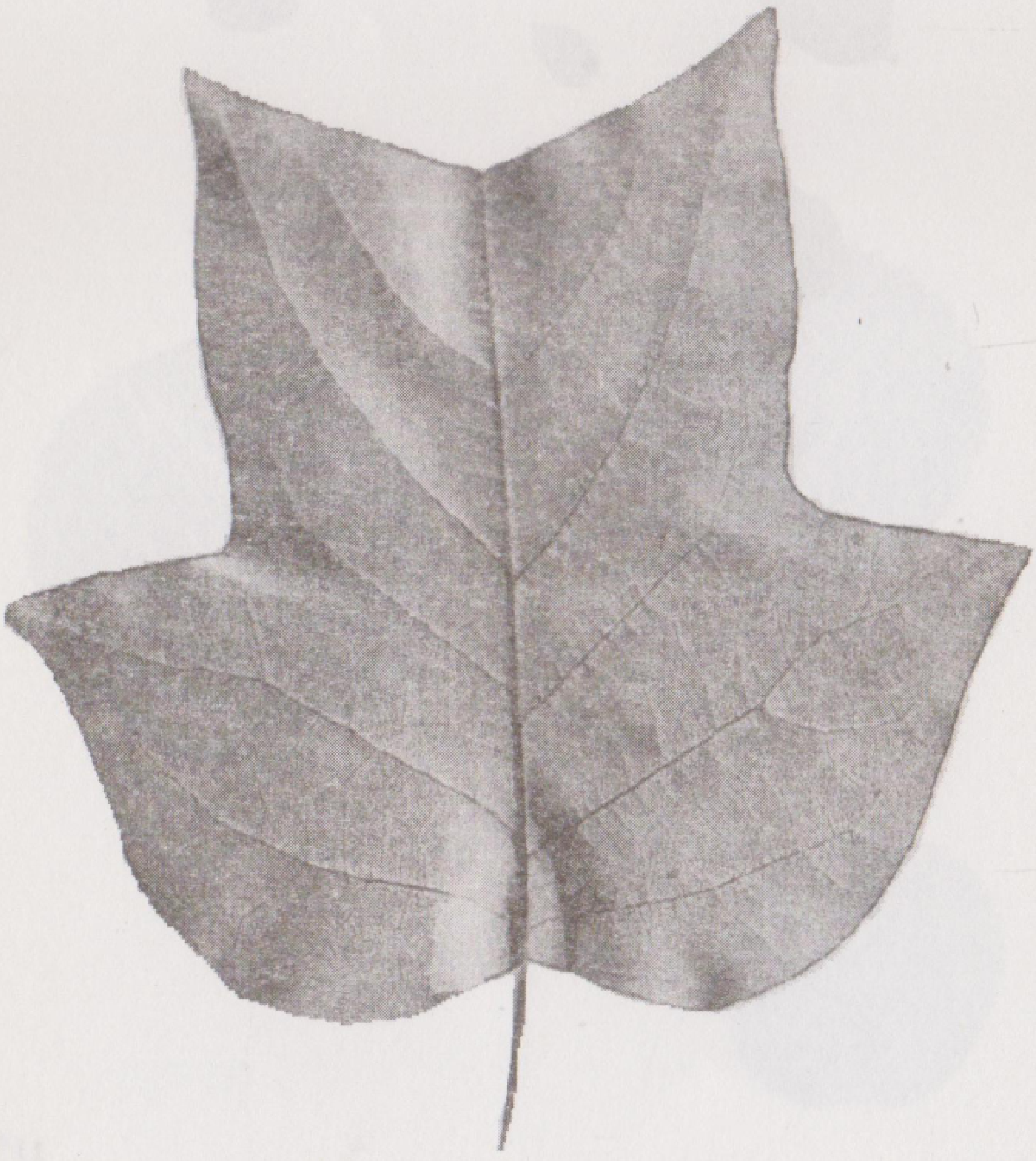
तो कुछ गोल थे।
एकदम गोल...





कुछ छोटे...

कुछ बड़े..



एक पत्ता पीला और
कत्थई रंग का था।

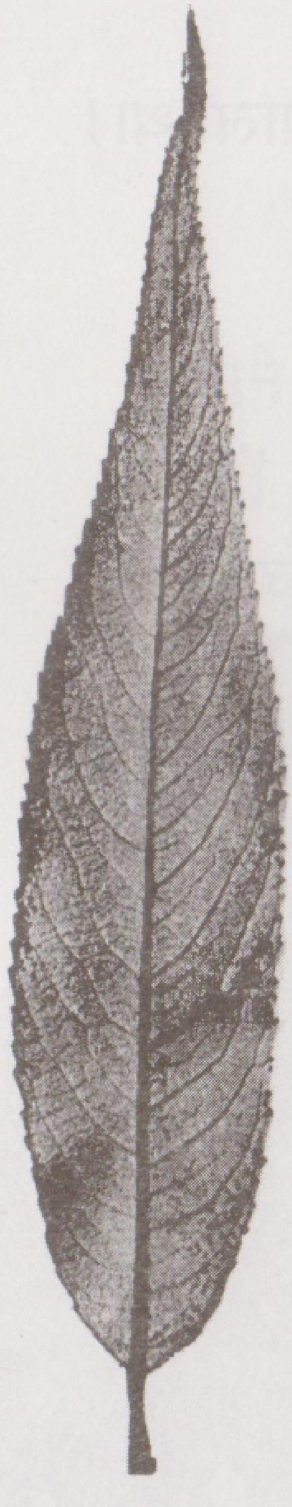


एक था लाल।





एक पत्ते पर नाड़ी
दिख रही थीं।



एक पत्ते
का डंठल
एकदम सीधा था।

एक पत्ता चित्तीवाला था।



हमने
पत्तों
को छूकर देखा।



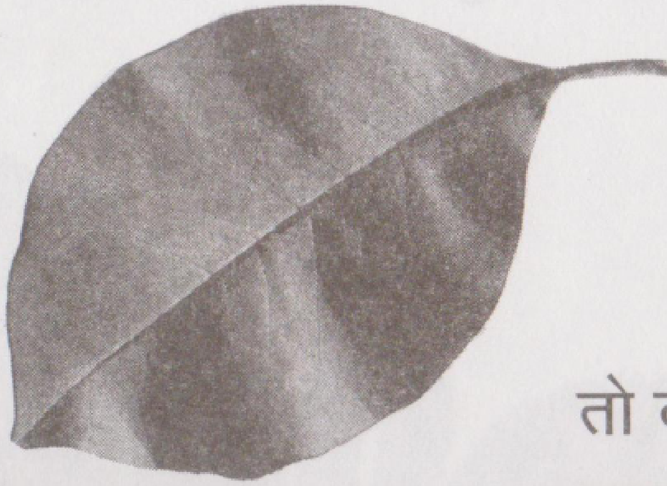
एक पत्ता
गुब्बारे जैसा था।



एक पत्ता कतरीला।



कोई पत्ता एक तरफ से
मुलायम था

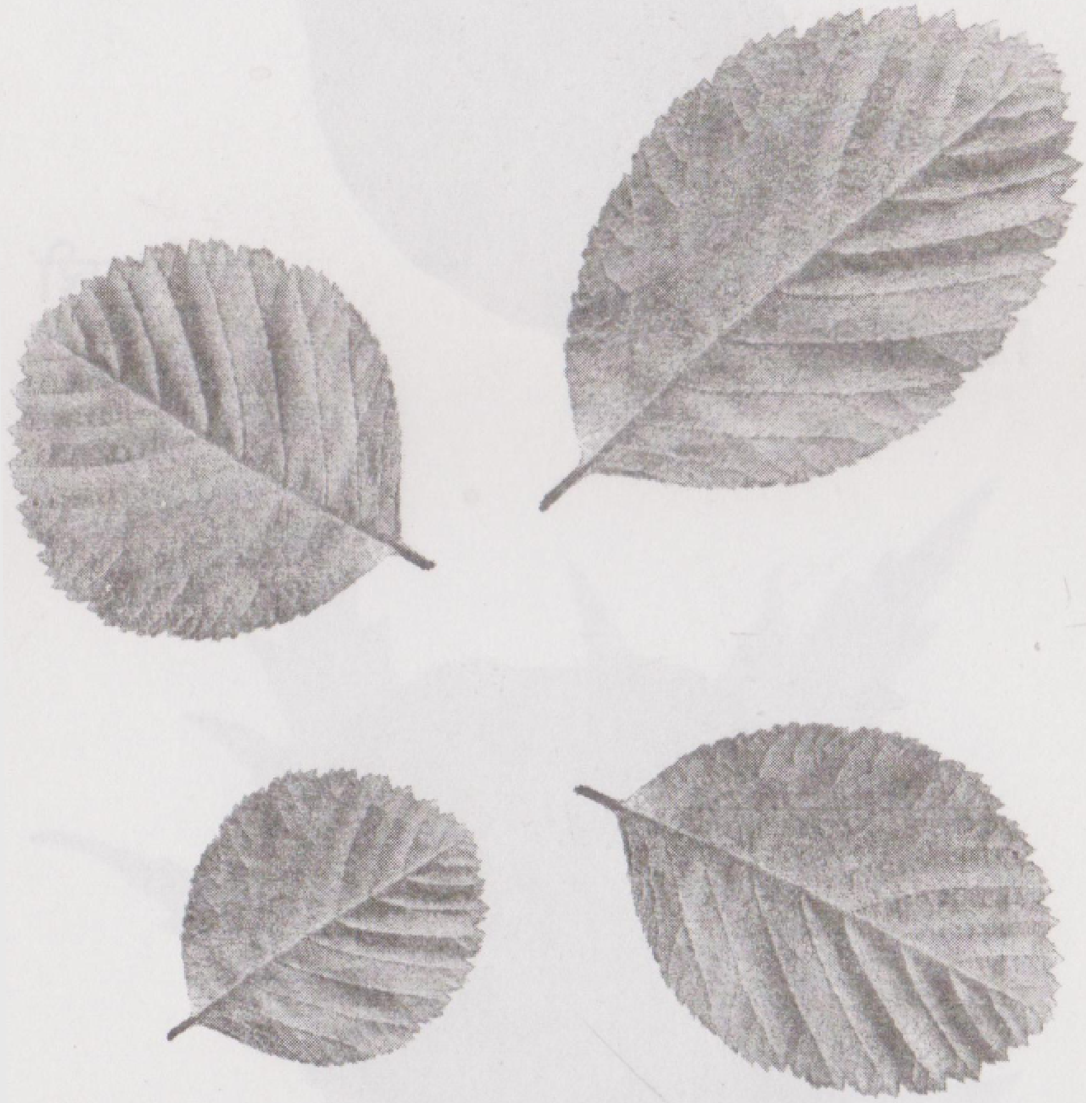


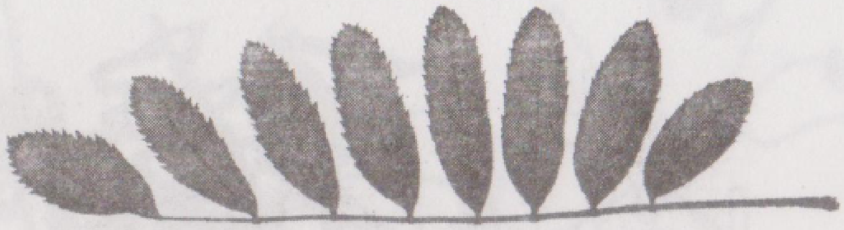
तो दूसरी
तरफ से
खुरदरा।



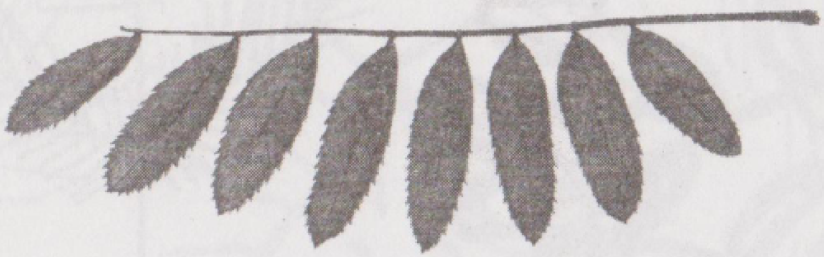
एक पत्ता झालर वाला था।

कुछ पत्ते जालीदार थे।





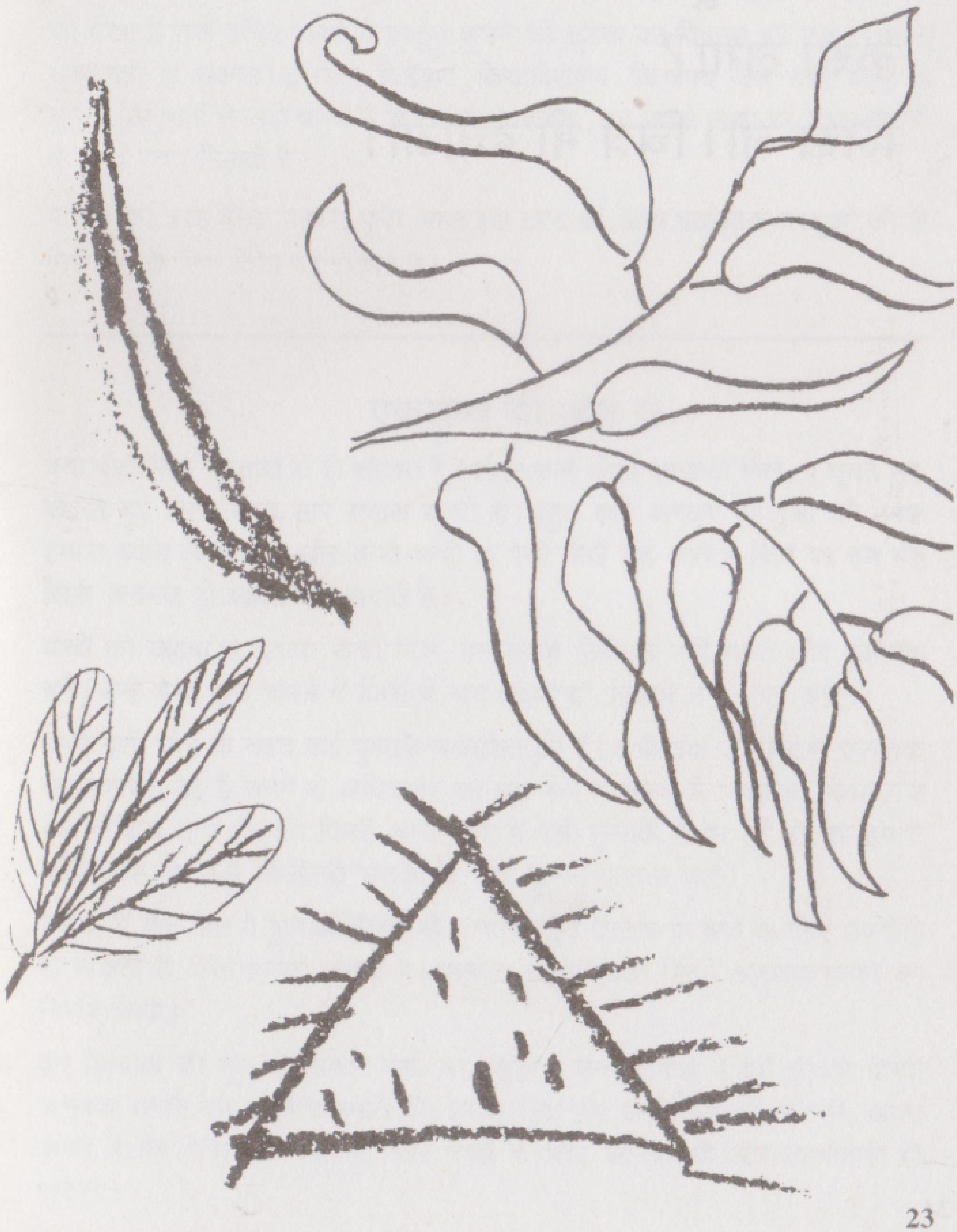
तो कुछ पत्ते
बंदनवार जैसे लग
रहे थे।



हमने पत्तों के चित्र बनाए।



कुछ चित्र पत्तों को देखकर
तो कुछ कल्पना से।



तुम भी बगीचे में चक्कर लगाओ।
पत्ते देखो / निहारो।
उन्हें हल्के से हाथ लगाओ।
क्या महसूस किया?
कैसा लगा?
लिख लो। चित्र भी बनाओ।

बड़ों से...

हर दिन सहज मिलने वाली शिक्षा के साथ-साथ कुछ नियोजित अनुभव बच्चों को मिलना भी महत्वपूर्ण है। चराचर की विविधता का प्रत्यक्ष अनुभव बच्चों को करना चाहिए। तरह-तरह की पत्तियों का निरीक्षण इस तरह के अनुभव में सहायक होता है।

निरीक्षण का अर्थ सिर्फ देखना नहीं है। स्पर्श, गंध, स्वाद, रूप, इनके द्वारा भी निरीक्षण करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

जो देखा है उसे उचित शब्दों में प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास हर एक में अपने आप नहीं हो सकता। इसलिए विशेषण, क्रियाविशेषण, क्रियापद जैसे शब्द ध्यान से चुनना, अनुभवों से सही शब्दों में वाक्य रचना करना, इन सबसे भाषा पर पकड़ बनाने में बहुत मदद मिलती है।

पत्तियों की तरह बीज, पत्थर, फूल, फल इस तरह की अन्य प्राकृतिक वस्तुओं को भी निरीक्षण के लिए दिया जा सकता है।

एकलव्य की ओर से

क्या बच्चे सिर्फ़ किताबों से ही सीखते हैं? अगर उन्हें थोड़ी आज़ादी मिले, वे घूमते हुए, खेलते हुए हमसे बहुत सारे सवाल करते हैं। बहुत सारे अनछुए पहलुओं की तरफ हमारा ध्यान ले जाते हैं और कभी-कभी तो ऐसी चीजें ढूँढ लाते हैं जिन पर हम बड़े सिर्फ़ अचरज ही व्यक्त कर सकते हैं।

बच्चों को ज़्यादा से ज़्यादा मौका मिले, हम उनके निर्देशक नहीं साथी और सहायक बनें। उन्हें ऐसा कुछ करने दें जिसे वे खुद चाहते हों, जिसमें उन्हें मज़ा आए।

हमने इसी सोच के तहत कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं। अभी तक जो पुस्तकें एकलव्य से प्रकाशित हुई हैं उनमें से अधिकतर को मूल रूप से हिन्दी में विकसित किया गया था। लेकिन साथ ही यदि किसी अन्य भाषा में ऐसी पुस्तकें तैयार हुई हों, तो हमारी कोशिश है कि उन्हें भी हिन्दी पाठकों के लिए सुलभ कराया जाए।

मराठी में विकसित ये पुस्तकें किसी भी भाषा से जुड़े पालक या बच्चे के लिए उपयोगी हो सकती हैं, ऐसा हमारा मानना है। इसलिए हमने इनका हिन्दी अनुवाद छापने का निर्णय लिया।

इन किताबों की मूल रचनाकार वर्षा सहस्त्रबुद्धे व उनके मित्रों ने हमें इसका हिन्दी अनुवाद छापने की सहर्ष अनुमति दी, इसके लिए हम उनके आभारी हैं। हम आशा करते हैं कि ये पुस्तकें पालकों और बच्चों के लिए आनंददायी और लाभकारी हो सकेंगी।

किताब के बारे में

क्यों? किसलिए?

यह किताब नया-नया पढ़ना सीखने वाले बच्चों, उनके पालकों और शिक्षकों के लिए हैं।

पालकों व शिक्षकों को ऐसे अनेक मौके मिलते हैं जब वे बच्चों को बढ़ते हुए देखते हैं, उनमें होनेवाले बदलाव देखते हैं। जब बच्चों का बाहरी दुनिया से सम्पर्क होता है तब बच्चों में क्या प्रतिक्रिया हो रही है, इसे वे अच्छी तरह समझ सकते हैं। छोटी-छोटी घटनाओं, वस्तुओं और लोगों के बारे में बच्चे क्या सोचते हैं, उनका क्या दृष्टिकोण है, इस बात का अहसास लिया जा सकता है। और इसके आधार पर हम बच्चों के विकास में मदद भी कर सकते हैं। लेकिन सही अर्थों में यह अहसास हम तभी कर सकते हैं जब हम बच्चों के साथ थोड़ा समय व्यतीत करें। उनके साथ बातें करने की तैयारी भी होनी चाहिए।

ऐसी इच्छा रखने वाले लोग भी कई बार कहते हैं कि 'कुछ करने को हम तैयार हैं लेकिन दरअसल क्या करें यह समझ नहीं आता?' इस छोटी पुस्तिका में प्रस्तुत इन अनुभवों से शायद ऐसे लोगों को कुछ मदद मिलेगी।

इस पुस्तिका के बारे में अपनी तथा बच्चों की प्रतिक्रिया हमें (एकलव्य या वर्षा के पते पर) ज़रूर भेजिए। शिक्षण सम्बन्धी कार्यों में (शैक्षणिक नोट के लिए) और अगली पुस्तकों के लिए यह उपयोगी होगी। अपना पता, बच्चों की आयु तथा यदि आप शिक्षक हैं, तो स्कूल का पता भी भेजिए।

इन पुस्तकों की विशेषता

◦ बाल-मनोविज्ञान पर बातचीत ◦ पढ़ने की क्षमता में सहायक भाषा ◦ जीवंत रेखाचित्र ◦ बड़ों का पन्ना ◦ गंभीर शैक्षणिक दृष्टि ◦ रचनात्मकता या सृजनशीलता को बढ़ावा ◦ बच्चों व पालकों के संवाद के लिए अवसर।